COURSE A

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सैकण्डरी स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : Hindi (A)

विषय कोड Subject Code : 002

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Friday 10-March-17

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाए : Write code No. as written on the top of the question paper :	Code Number	Set Number
	3/3	① ② ● ④

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer -book(s) used

विकलांग व्यक्ति : हाँ / नहीं
Person with Disabilities : Yes / No — No

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएँ।
If physically challenged, tick the category

B	D	H	S	C	A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No — No

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सोफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used : —

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।

Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

8350695
002/00054

खण्ड - क

1. (क) कर्तव्यपालन
(ख) वहाँ के निवासियों पर
(ग) वाहन - चालकों को सुधारा है
(घ) गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका को नकारना
(ङ) जिम्मेदारी के प्रति सचेत करना

2. (क) राखीगढ़ी
(ख) शहर नियोजित था
(ग) नष्ट हो जाने का खतरा है
(घ) काफ़ी प्राचीन और बड़ी सभ्यता हो सकती है
(ङ) राखीगढ़ी : एक सभ्यता की संभावना

3. (क) निराशा और जड़ता छोड़ो
(ख) दुखी लोग और ईश्वर
(ग) उच्च आदर्श और आशा के महत्व को बनाए रखेंगे
(घ) इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहें
(ङ) भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहे

मूर्ख हैं।

4. (क) मूर्ख हैं।
(ख) प्रगति के पथ पर एक कदम भी नहीं बढ़ा
(ग) सबसे बलशाली हैं
(घ) हम हवाओं के बल पर झूमते हैं
(ङ) सबने अपने अहंकार में उसे भुला दिया

खण्ड - ख

5. (क) ~~दूसरे फलों के साथ डलिया में आम रखे हैं~~ डलिया मे दूसरे फलों के साथ आम रखे हैं।
(ख) पीलक शर्मीला है इसलिए पेड़ के पत्तों में छुपकर बोलता है।
(ग) मिश्र वाक्य

6. (क) कुछ छोटे भूरे पक्षियों द्वारा मंच सँभाल लिया जाता है
(ख) बुलबुल रात्रि-विश्राम अमरूद की डाल पर करती है
(ग) तुमसे दिनभर कैसे बैठा जाएगा ?
(घ) सात सुरों को उसके द्वारा गज़ब की विविधता के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

7. (a)

मानव को

भेद - संज्ञा

उपभेद - जातिवाचक संज्ञा

लिंग - पुल्लिंग

वचन - एकवचन

कारक - संप्रदान कारक

कठिन

भेद - विशेषण

उपभेद - गुणवाचक

लिंग - पुल्लिंग

वचन - एकवचन

विशेष्य - 'कार्य'

कार्य

भेद - संज्ञा

उपभेद - जातिवाचक

लिंग - पुल्लिंग

वचन - एकवचन

लेकिन

भेद - समुच्चयबोधक

उपभेद - समानाधिकरण

पदों को जोड़ रहा है। - 'मानव को इंसान बनाना अत्यंत ही कठिन कार्य है', ~~और~~ 'लेकिन असंभव नहीं।' को जोड़ रहा है।

8. (क) (i) रौद्र रस

(ii) करुण रस

(ख) (i) संतति प्रेम स्थायी भाव है।

(ii) हास्य रस का स्थायी भाव है हास

खण्ड-ग

9. (क) पुराणों में नियमबद्ध शिक्षा प्रणाली न मिलने पर लेखक आश्चर्य नहीं मानता क्योंकि पुराने ज़माने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय नहीं था तो नियमबद्ध प्रणाली कहाँ से मिलती। यदि कोई कोई उल्लेख रहा भी हो ~~के~~ परंतु नष्ट हो गया हो तो उसका पुराणादि में न मिलना आश्चर्यजनक नहीं है।

(ख) लेखक ने यह बताया है कि पुराणादि में जहाज़ बनाने के कोई ग्रंथ न होने के बाद भी हम उनका अस्तित्व बड़े गर्व से स्वीकार कर लेते हैं उसी प्रकार हमें यदि पुराणों में स्त्री शिक्षा की नियमबद्ध प्रणाली न मिले तो इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि पुराने ज़माने की सभी स्त्रियाँ अनपढ़ थीं या उन्हें पढ़ाने की परंपरा न थी क्योंकि पुराने ग्रंथो में अनेक विद्वान पंडिताओं का उल्लेख मिलता है।

(ग) शिक्षा की नियमावली का न मिलना, स्त्रियों के अपढ़ होने का सबूत नहीं है क्योंकि पुराने ग्रंथो में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं का नामोल्लेख मिलता है।

10. (क) मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के बारे में बताते हुए कहा है कि उनकी माँ में धरती से कुछ अधिक ही सहनशीलता व धैर्य है। उन्होंने जीवन में अपने लिए कुछ नहीं चाहा केवल दिया ही दिया है। वह हमेशा पिताजी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित इच्छा को अपना फर्ज़ समझकर निभाती थी। लेखिका कहती हैं उनका और उनके भाई-बहनों का सारा लगाव माँ के प्रति था। साथ ही लेखिका ने यह भी कहा है कि उनकी माँ का निहायत मजबूरी में लिपटा त्याग कभी उनका आदर्श नहीं बन सका।

(ख) लेखिका ने अपने पिता के शक्की स्वभाव का कारण अपनों के हाथों विश्वासघात होने का दिया है। वह विचार करती हैं कि कितनी गहरी चोटें होंगी वे अपनों के द्वारा विश्वासघात की जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता जी को इतना शक्की बना दिया। लेखिका ने यह भी बताया कि गिरती आर्थिक व्यवस्था के कारण भी पिताजी का स्वभाव बाद के दिनों में शक्की हो गया था कि जब-तब परिवार के बाकी लोग भी इसकी चपेट में आते रहते थे।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ अस्सी वर्ष से खुदा से सच्चे सुर की माँग कर रहे थे। उन्हें विश्वास था कि एक दिन खुदा उन पर यूँ ही मेहरबान होगा और ~~उनकी~~ अपनी झोली से सुर का फल उछाल कर उनकी ओर फेंकेगा और कहेगा 'जा अमीरुद्दीन। ले जा इसे और करले अपनी मुराद पूरी। अर्थात एक दिन ~~सच्चे~~ सुर को बरतने की तमीज उन्हें अवश्य आएगी।

(घ) काशी से मलाई बर्फ, कचौड़ी, अदब और आदर की संस्कृति के जाने के बाद भी अभी कुछ शेष है जो केवल काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती है और इसी की थापों पर सोती है। काशी में बिस्मिल्ला खाँ के रूप में संगीत और सुर की तमीज़ सिखाने वाला हीरा रहा है।

(ङ.) कौसल्यायन जी के अनुसार संस्कृति ही सभ्यता की जननी है। हमारे खान-पान के तरीके, हमारे रहन-सहन के तरीके, हमारे गमना-गमन के साधन, परस्पर कट-मरने के तरीके, ये सब हमारी सभ्यता हैं।

11. (क) इस पंक्ति आशय है कि मुख्य गायक तारसप्तक में गाता है और उसमें गाते हुए उसकी आवाज़ में प्रवाह कम होने लगता है और वह अपने सुर से भटक जाता है और उसका सुर बुझा-बुझा सा प्रतीत होने लगता है।

(ख) मुख्य गायक की ढाढ़स बँधाता है संगतकार। जब तारसप्तक में गाते हुए मुख्य गायक का गला बैठने लगता है, उसका उत्साह कम होने लगता है तब संगतकार उसके स्वर में अपना स्वर मिलाकर उसे ढाढ़स बँधाता है।

(ग) ऊँचे स्वर में गाने तारसप्तक कहलाता है।

12 (क) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को अपने चेहरे पर ~~री~~ न रीझने की सलाह इसलिए दी है क्योंकि प्रशंसा के वे शब्द उसे आदर्श रूपी बँधन में बाँध देंगे और समाज के सामने उसकी यही कोमलता उसकी कमज़ोरी बन जाएगी।

(ख) माँ को बेटी को दान में देने का दुख प्रामाणिक था। उसकी बेटी इसे अंतिम पूँजी के समान लग रही थी क्योंकि उसने उसे इतने प्रेम से पाला था और जीवन भर उसे सँभाल कर रखा था। अब वह उसे किसी और को दे रही है। अब इसकी बेटी उसके लिए पराई हो जाएगी। इसी कारण माँ का दुख इतना प्रामाणिक था।

(ग) कवि इस पंक्ति में कहते हैं कि जो तुम्हें नहीं मिला उसे सोचकर मत दुखी हो और उसे भूलकर भविष्य के बारे में सोचो, उसे सुंदर बनाने के बारे में सोचो। कवि अपनी बुद्धि का प्रयोग कर बीती बातों को भूलने को कहते हैं क्योंकि बीती यादें याद करके केवल दुख की प्राप्ति ~~होगी~~ होगी और आने वाले भविष्य को सुखी बनाने का प्रयास करने को कहते हैं ताकि भविष्य में हम सुख से रह सकें। इस प्रकार इस कथन में कवि की वेदना और चेतना व्यक्त हो रही है।

(घ) राम ने यह पंक्ति तब कही थी जब ~~परश्~~ परशुराम क्रोधित होकर सभा में आए और पूछने लगे कि शिव जी का धनुष किसने तोड़ा। श्री राम का उत्तर उनके विनम्र स्वभाव को दर्शाता है। वह स्थिर बुद्धि के थे। उनमें सहजता और सरलता के गुण विद्यमान थे। उनके वचनों में जल के समान शीतलता थी।

(ङ) परशुराम स्वभाव से क्रोधी थे और अपनी साहस व बल पर अभिमान करते थे।

जब उन्हें शिव जी के धनुष के टूटने का पता चलता है तो वे क्रोधित होकर सभा में आते हैं और धनुष तोड़ने वाले को समाज से अलग होने का आह्वान देते हैं अन्यथा सारे राजाओं को मारने की बात करते हैं।

परशुराम अपने साहस और बल का बखान करते हुए कहते हैं कि उन्होंने अपनी भुजाओं के बल से अनेक बार पृथ्वी को राजाओं से रहित करके ब्राह्मणों को दान में दिया है और उनका फ़रसा तो आवाज़ से गर्भों के बच्चों का नाश करने वाला है।

18. यह कथन पाठ 'साना - साना हाथ जोड़ि' में एक फौजी ने कहा था जब लेखिका ने उनसे पूछा था कि इतनी ठंड में वे वहाँ कैसे रहते थे।

इस कथन से हमें पता चलता है कि फौजी अपने देश और देशवासियों के भविष्य के लिए निस्वार्थ भाव से अपने आज को ठुकरा देते हैं। फौजी जवान ऐसे स्थानों व परिस्थितियों में दिन - रात पहरा देते हैं जो आम - जनता के लिए अत्यंत विषम हैं। ऊँचे - ऊँचे बर्फीले पहाड़ों पर जहाँ पेट्रोल के सिवाय सब कुछ जम जाता है, यह जवान वहाँ तैनात रहते हैं। रेगिस्तान के गर्मी के दिनों में तपा देने वाली धूप में भी यह तैनात रहते हैं और हाँफ - हाँफकर अनेक विषमताओं का सामना करते हैं। इन्हें लगातार दुश्मनों का सामना करना पड़ता है। ये अपना कार्य अपने परिवारों से दूर रहकर करते हैं। ये जवान हमारे देश का गौरव और प्रतिष्ठा अक्षुण्ण करने वाले महारथी हैं। अतः हमारा यह फर्ज बनता है कि हम उन्हें मान दें, सम्मान दें। इनके परिवारों के प्रति आत्मीय संबंध बनाए रखें। फौजी जवान सीमाओं पर तैनात हैं - इस तथ्य को जानते हुए देश के लोग चैन की नींद सो पाते हैं। इसलिए हम इतना तो कर ही सकते हैं कि जवानों के गर्म कपड़े भिजवाएँ, दवाइयाँ भिजवाएँ, उन्हें सम्मानित करें।

खण्ड – घ

14. (ख)

आतंकवाद

बढ़ता आतंकवाद :- आतंकवाद आज का सबसे बहुप्रचलित शब्द है। यह शब्द सुनते ही हमारे दिमाग में बम विस्फोट, पिस्तौलधारी लोगों की छवियाँ मस्तिष्क में कौंधती हैं। समाज में आतंकवाद आज इतना बढ़ गया है कि इस बात का भी भरोसा नहीं रह गया है घर से निकलने के बाद हम घर पहुँच भी पाएँगे या नहीं। आतंकवाद केवल बम विस्फोट करना ही नहीं बल्कि जाति, धर्म आदि के नाम पर होने वाले झगड़े भी आतंकवाद के अंतर्गत आते हैं। – मनुष्यता के खिलाफ़ आतंकवाद।

भारत में आतंकवाद :- आज भारत में भी आतंकवाद की बढ़ोत्तरी हुई है। आए दिन समाचार पत्रों और दूरदर्शन पर किसी न किसी आतंकवादी के पकड़े जाने की खबरें आती रहती हैं और सीमाओं पर घुसपैठ की। सीमाओं पर घुसपैठ रोकने में हमारे देश के फौजियों का योगदान रहता परंतु अनेकों सैनिक मारे भी जाते हैं जिससे हमारा मन आक्रांत रहता है। बंबई के ताज होटल में बम विस्फोट, दिल्ली में संसद सदन पर

आतंकवादी हमला हमे याद दिलाते हैं कि आतंकवाद हमारे देश को कितनी चोट पहुँचाई है। हमने कितने अपनों को खोया है आतंकवाद की आग्नि में। हमारे प्रधानमंत्री ने आतंकवाद के खिलाफ़ जो मुहिम छेड़ी है, आशा है उसके सकारात्मक परिणाम सामने आएँगे परंतु तब तक हमें एक साथ मिलकर, एक दूसरे की सहायता करके रहना होगा।

विश्व-स्तर पर आतंकवाद :- केवल भारत में ही नहीं विश्व स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ़ आवाज़ दृढ़ हुई है। फ्रांस, अमरीका, इराक, सीरिया हर देश मे आतंकवादी गतिविधियों ने जोर पकड़ रखा है। सभी देशों ने आतंकवाद के खिलाफ़ एक होने का आह्वान दिया है।

आतंकवादियों के लिए कोई किसी देश का नहीं है उनका कार्य तो केवल आतंक फैलाना मनुष्यता का विनाश करना है। पाकिस्तान के स्कूली बच्चों को मारकर आतंकवादियो ने यह सिद्ध कर दिया कि वे किसी धर्म के नहीं। आतंकवाद से लड़ने का केवल एक उपाय और वह है विश्व के देशों में आपसी सौहार्द्र। जब तक सब लोग एक साथ हैं हमारी शक्ति उतनी ही अधिक है और आतंकवाद को इस अविभाज्य मानव संस्कृति को विभाजित करने के सभी उपाय बेकार हो जाएँगे।

15.

परीक्षा भवन
अ.ब. स नगर

दिनांक : 10 मार्च 20xx

पूजनीय माता जी
सादर चरण स्पर्श

आपका पत्र मिला। पत्रोत्तर में विलंब के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। पिछले एक माह से हम विद्यालय में होने वाले संगीत समारोह की तैयारियों में व्यस्त थे इसलिए आपके पत्र का उत्तर नहीं दे पाई।
~~संगीत समारोह~~ गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे विद्यालय मे संगीत समारोह आयोजित किया गया और पूरे विद्यालय को दुल्हन की तरह सजाया गया। विशिष्ट अतिथियों में प्रसिद्ध शहनाईवादक एवं अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।
समारोह का आरंभ सरस्वती वंदना से हुआ। इसके बाद अनेक प्रकार के कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई थी। हमारे संगीत के शिक्षक के साथ कुछ विद्यार्थियों ने बहुत बेहतरीन गायन व वादन पेश कर पूरे माहौल को संगीतमय बना दिया। सभी कार्यक्रमों का आधार

था हमारे देश के प्रसिद्ध शहनाईवादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को श्रद्धांजलि देना। तत्पश्चात प्रधानाचार्य ने सभी विद्यार्थियों के कार्य ~~क~~ और मेहनत को सराहा और उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को श्रद्धांजलि देने के बाद ~~श~~ इस संगीतमय रात्रि का समापन हो गया।
पिता जी को मेरा प्रणाम और रोहन को प्यार।

आपकी पुत्री
क.ख.ग

16 : शीर्षक — मनुष्य और पशुत्व

सार — नाखूनों का बढ़ना मनुष्य में उसी प्रकार पशुत्व का द्योतक है ~~क्योंकि~~ जिस प्रकार अस्त्र-शस्त्रों का बढ़ना है जीवन में। ~~पशुत्व~~ मनुष्य की घृणा पशुत्व को जन्म देती है जबकि ~~अ~~ दूसरों का आदर करना व अपने को संयत रखना मनुष्यता को। जिस दिन मनुष्य द्वारा मारणास्त्रों का प्रयोग बंद हो जाएगा उस दिन उसका पशुत्व का भी अंत हो जाएगा।